Book No • 04

तज़किरतुश् - शैख का हिन्दी तर्जुमा

ताजुश्शरिया

हयात व ख़िदमात

मुसन्निफ़ - मोहम्मद हस्सान रज़ा राईनी

मुतर्जिम - कलीम रज़वी

नाशिर:

तहरीक निज़ामे मुस्तफा ﷺ

tnmofficial786.blogspot.com

ALL RIGHTS RESERVED

No part of publication may be produced, stored in a retrieval system or transmitted in any form or by any means, electronic or mechanical, photocopying or otherwise without the prior permission of the **COPYRIGHT** owner.

Book name : Tajush-Shariya: Hayat wa Khidmat

Language : Hindi

Authored by : Muhammad Hassaan Raza Rayeeni

Translated by: Kaleem Razwi

Hijri Date : 06 Zul Qa'dah 1442 H

English Date : 17 June 2021(Thursday)

Publisher : Tehreek Nizam e Mustafa (India) or TNM Official

Any Query, contact us : 9675801762 & 9720315389

Read another books, visit: https://tnmofficial786.blogspot.com/

Also follow us on: Facebook | Instagram | Youtube | Twitter

About Us:

All Praise is to Allah the Exalted! The revolutionary organization of Ahlus Sunnah wal Jama'ah "Tahreek Nizam e Mustafa ﷺ" is constantly working for propagating the message of Ahlus Sunnah. And every work which it does is in the light of thoughts and views of Imam Ahmad Raza. It is an organization comprising of students from schools and colleges as well as seminaries (Madaris). The main aim of our organization is to preserve the beliefs of Ahlus Sunnah and the eradication of various ill practices in the society and regarding the same time and again various articles are published by us and along with it religious gatherings are organized. It is supplication to Allah the Exalted that he through the mediation of his Prophet (peace and blessings be upon him) blesses the members of this organization with true love of Islam and keeps them firm on the creed of Ahlus Sunnah wal Jama'ah and gives them success in their goals. Ameen.

TNM OFFICIAL

तकरीज़

फरदीन अहमद खान रज़वी

الحمد لله رب العالمين و الصلوة و السلام على سيد المرسلين و خاتم النبيين و على آله الطيبين الطاهرين و صحبه الغر الميامين و تابيعهم إلى يوم الدين

اما بعد:

अल्लाह तबारका वा तआला का बे पनाह एहसान और करम है के उसने हमें अपने हबीबे मुकर्रम ﷺ के ज़रिए हिदायत अता फ़रमाई हर दौर और हर अस्र में ऐसे बंदगाने ख़ुदा पैदा होते रहे हैं जिनकी फग़ाने सहरी से मुर्दा दिलों में जज़्बा ए ईमानी बेदार और जिनकी शबो रोज़ की तगो दौ से एक आलम को रुशदो हिदायत मिलती है उनके बेमिसाल किरदार की शुआएं हर तारीकी वा अंधेरी को ख़त्म करके हक़ की रौशनी फैलाती हैं हमारे दौर में भी एक ऐसी ही अदीम-उन्-नज़ीर शख़्सियत जलवा अफ़रोज़ हुई जिसे ये दुनिया ताजुश्शरिया मुफ्ती अख़्तर रज़ा ख़ान अज़हरी अलेह रहमा के नाम से जानती है और उनकी मकबूलियत का अंदाज़ा तो इसी बात से लगाया जा सकता है के आप इस जहान के किसी मुल्क में चले जाएं आपको उनके चाहने वाले मिल जाएंगे जिनकी हयाते ज़ाहिरी में उनके मुताल्लिक बे-शुमार रसाइल, जरायद, खुसूसी शुमारे मंज़रे आम पर आ चुके थे आज का अगर जायेज़ा लें तो आलम ये है हर क़लमकार छोटा हो या बड़ा हर शैख़ चाहें किसी सिलसिले का हो, हज़रत ताजुश्शरिया की मद्दाह में रत्बुल

लिसान नज़र आता है हर इदारा आपको अपने अंदाज़ में ख़िराजे अकीदत पेश करता है और हर अहले सुन्नत का फर्द आपसे मुहब्बत करता है इसी सिलसिला ए नूर की एक कड़ी है अज़ीज़म जनाब हस्सान रज़ा राईनी साहब का ये रिसाला, जिसमे मौसूफ ने हुज़ूर ताजुश्शरिया अलेह रहमा की हयातो ख़िदमात को अहसन अंदाज़ में उजागर किया है

अल्लाह से दुआ है के इसे हल्क़ा ए इल्मो दानिश और अवाम में पज़ीराई अता फरमाए और हमे दारैन की सआदतों से सरफराज़ फरमाए

آمین یارب العالمین یا مجیب الدعوات بجاه النبي الأمین من هو دافع البلاء و الآفات علیه افضل السلام و أكمل الصلوات

दरगाह ए ताजुश्शरिया का एक अदना सवाली

फरदीन अहमद ख़ान रजवी

पीलीभीत शरीफ यूपी इंडिया

ताजुश्शरिया इल्मो अमल के कामिल नमूना

तारिक़ अनवर मिस्बाही

ताजुश्शरिया, बदरुत-तरीक़ा,वारिसे उलूमे आला हज़रत,नायबे मुफ्ती ए आज़म हज़रत अल्लामा मुफ्ती अख़्तर रज़ा ख़ान अलेह रहमतो वर-रिज़वान का शुमार उन शख्सियतों मे है जिनका ज़ाहिर और बातिन दोनो ही मुनव्वर था वह मुत्तबा ए शरीयत और तक़बा ओ परहेज़गारी के कामिल नमूना थे ऐसी अज़ीम शख्सियतों की अज़ीम सीरत व सवानेह और हालाते ज़िंदगी क़ौम के सामने आनी चाहिए ताकि लोग उनके नक्शे क़दम पर चलकर अपनी दुनिया और आख़िरत को संवार सकें आलाहज़रत मुजद्दिदे दीनो मिल्लत इमाम अहमद रज़ा क़ादरी रदीअल्लाहु तआला अन्हु के ख़ानदान में बहुत से रौशन आफ़ताबो माहताब हुए ये ख़ानदान करीबन दो सदी से इस्लामो सुन्नियत की क़यादत और रहनुमाई का फरीज़ा अंजाम दे रहा है इस्लामियाने हिंद की तारीख़ ख़ानवादा ए रज़विया की बे-लौस पुरखुलूस ख़िदमात के वाक़ेआत व हालात से मालामाल है ये उलामा ओ उमरा का ख़ानवादा है इमामे अहले सुन्नत कुद्दसा सिर्रुहुल अज़ीज़ के आबा ओ अजदाद भी आलिम थे और उनके फरज़न्दो में बहुत से जलीलुल क़द्र उलामा हुए। मुजद्दिद मौसूफ के साहिबज़ादगान हुज्जतुल इस्लाम हज़रत मौलाना हामिद रज़ा ख़ान

(1292 -1362)हिजरी वा मुफ्ती आज़मे हिंद हज़रत मौलाना मुस्तफा रज़ा ख़ान (1892-1981) ईसवी तक अपने अहद में मरजए खलाइक थे

माज़ी क़रीब में मुजद्दिद ममदूह के अहफाद में से ताजुश्शरिया हज़रत अल्लामा अख़्तर रज़ा ख़ान अज़हरी कुद्दसा सिर्रुहु अलक़वी इल्मो फज़ल और ज़ोहदो वरा में फाइक-उल-इक़रान थे उनके इल्मो फ़ज़ल का शोहरा और दीनी ख़िदमात का ग़लग़ला चहार जानिब है उनकी हक़गोई वा हक़ शनासी बेमिसाल थी उनकी क़ुबूलियत ओ मुहब्बत और शोहरत ओ अज़मत क़ाबिले दीद थी मौसूफ जहां कहीं जलवा अफ़रोज़ होते ता हद्दे निगाह परवानों का एक तवीलो अरीज़ मजमा लग जाता उस घराने की अज़ीम शख्सियतों को देखकर हर कोई बेसाख्ता पुकार उठता है

ईं सिलसिला अज़ तिलाए नाब अस्त

ईं ख़ाना हमा आफताब अस्त

(ख़्वाजा बाक़ी बिल्लाह नक्शबंदी देहलवी)

फाज़िले ग्रामी हज़रत मौलाना हस्सान मलिक पीलीभीती ने हुज़ूर ताजुश्शरिया कुद्दसा सिर्रुहुल अज़ीज़ की सीरत ओ सवानेह का एक हसीन मजमूआ तरतीब दिया है इस में साहिबे सवानेह की हयात ओ खिदमात की मुख्तलिफ जिहात वा हैसियत की तफ़्सील रकम की गई है ये फाज़िले ममदूह की क़लमी काविशों का

एक खुशनुमा गुलदस्ता है जिसमे क़िस्म क़िस्म के खुश पैकर फूलों की जलवानुमाई है और मज़ामीन का हुस्नो आराइश क़ारेईन के लिए मुतास्सिरकुन है ऐसी तहरीरें नज़रों को सुरूर और दिलों को फरहतो शादमानी अता करती हैं मौसूफ की मुताद्दिद इल्मी वा तहरीरी काविशों को देखने का मौका मिला ये उनकी हुस्ने ज़ौक़ और बुलन्द हौसलगी की वाज़ेह मिसालें हैं

अल्लाह तआला मौसूफ की इस क़ाबिले कद्र काविश को कुबूल फरमाए और मौसूफ को दोनों जहान की सआदतों, बरकतों और नेअमतों से सरफराज़ फरमाए खिदमते दीन का जज़्बा ए कामिल और क़वी हौसला अता फरमाए और फरोगे दीन व सुन्नियत के लिए वसाइल मुहय्या फरमाए

तारिक़ अनवर मिस्बाही

मुदीर माहनामा पैग़ामे शरीयत देहली

नाज़ था जिनकी ज़ात पर खुद मुफ्ती-ए-आज़म को

शोएब रज़ा निज़ामी

अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त ने ख़ानवादा ए रज़ा (बरेली शरीफ) को जिन फज़ाइलो कमालात से नवाज़ा है वह जगज़ाहिर है इस ख़ानवादे की सबसे बड़ी खूबी इश्क़े रसूल में सरशार होना और उसवा ए रसूल पर कुछ इस तरह कारबंद होना है के दुनिया हज़ार मुखालिफत के वाबजूद उनके कसीदे पढ़ने पर मजबूर हो जाए

बात उस वक़्त की है जब हुजूर ताजुश्शरिया अलेह रहमा बरेली शरीफ से दुनिया की मशहूर यूनिवर्सिटी जामियातुल अज़हर (मिस्र) तालीम की गर्ज़ से तशरीफ ले गए चूंकि जामियातुल अज़हर सिर्फ दीनी दानिशागाह नही बल्कि असरी इल्मो फ़न का मरकज़ है साथ ही वहां मुख्तलिफ जगहों, आदात और नज़रियात के तलाबा रहते हैं उनके दरमियान अपने नज़रिए पे क़ायम रहना बड़ा दुश्वार काम होता है लेकिन जब आप वहां तशरीफ ले गए तो आप के तर्ज़े अमल पर उसका कोई असर न पड़ा बल्कि जैसे आप यहां रहकर शआ़इरे शरियत के पाबंद थे वैसा ही वहां भी रहे और जब इम्तियाज़ी नंबरों से पास होकर अपने मुल्क लौटे तो खुद मुफ्ती-ए-आजम ए हिंद अलेह रहमा ने स्टेशन जाकर आपका इस्तिक़बाल किया और दुआएं देते हुए फरमाया के

"यूनिवर्सिटियों की हवा आपको न लगी वरना तो बहुत सारे लोग वहां जाकर अपना तो हुलिया ही बदल लेते हैं "

ये तो आपके आदात ओ अतबार की बात रही जब आपने अमली दुनिया में क़दम रखा तो वहां भी आप इस्तिक़लाल के पैकर बने रहे और शरीयत में किसी की तबियत को दख़लअंदाज न होने दिया अभी चन्द बरस पहले बाबरी मस्जिद पर जब हुक़ूमत के इशारे पर श्री श्री रविशंकर ने मुसलमानो से एकतरफा सुलह करने की प्लानिंग की और अपना मनसूबा लेकर मुख़्तलिफ मकातिबे फ़िक्र के कायेदीन के पास पहुंचा तो उसका पुरज़ोर इस्तिक़बाल किया गया आख़िर में जब बरेली का रुख किया तो उसे दरवाज़ा बंद मिला यहीं से इसके मनसूबे का शीराज़ा बिखर गया ये अज़्म और इस्तिक़लाल था हुज़ूर ताजुश्शरिया का जिन्होंने इतने बड़े मसअले में हुकूमत के सामने शरीयत को नीलाम न होने दिया

शोएब रज़ा निज़ामी

खादिमे तदरीस व इफ्ता

दारुल उलूम इमाम अहमद रज़ा

बंदेशरपुर सिद्धार्थनगर

ताजुश्शरिया एक फक़ीह एक क़ाज़ी

फरदीन अहमद खान रज़वी

मुसलसल शबो रोज़ का बदलना और उसी के साथ वक़्त की रफ्तार में रोज़ अफ्ज़ू इज़ाफ़ा हर लह्ज़ा हर आन मज़हबे इस्लाम की शान ओ शौकत को दोबाला करता है ये वो दीन है जो ज़माना गुज़रने से फरसूदा नही होता और न ही उसकी आफाक़ी तस्वीर की खूबसूरती किसी ख़ास अस्र की मरहूने मिन्नत है ये हर दौर का दीन है और क़यामत तक के लिए आया है ख़ालिके क़ायनात ने अपने फ़ज़ल से इसकी हिफाज़त का ज़िम्मा लिया है और वही इसका मुहाफिज़ है ये दीन बुलंद है और बुलंद करने वाला है जो ख़स्ताहाल, पस्ता ओ निढाल भी इसके दामन ए करम से वाबिस्ता हो जाता है उसे भी रश्के माहो महर बना देता है मालिके क़ौनैन का हम पर बेपनाह एहसान और करम है के वो हर दौर में तारीकी को मिटाने इस्लाम की ज़ौ को आलम में फैलाने वाले अफ़राद भेजता है जिनके ज़रिए से ख़लक़े कसीर रहनुमाई पाती है

चमनिस्ताने आलम की आबयारी करने वाली ये वो नुफूसे कुद्दसिया होती हैं जिनके अरफा हौसलों के आगे कोहे हिमाला भी शर्माता नज़र आता है इसी कारवाने इल्मो हिकमत के हमारे वक़्त के काफिला सालार थे हज़रत

ताजुश्शरिया मुफ्ती अख़्तर रज़ा ख़ान अज़हरी अलेह रहमा जिन्होंने तारीख ए इंसानियत में अज़्मो हिम्मत का एक अनोखा बाब लिखा उनकी ज़िंदगी पर जिस जिहत से रौशनी डाली जाए उस जिहत आप अपने वक़्त में मुमताज़ नज़र आते हैं न सिर्फ ये के आप एक इल्मी वा अदबी घराने में पैदा हुए बल्कि आपने आलमे इस्लाम में अपनी अलग पहचान बनाई आप एक बुलंद पाया मुहक्क़िक, शनासा हदीसदां, फिक़्ह व फतावा में आला मक़ाम रखने वाले, अरबी ज़बान के माहिर, एक बाज़ौक़ शायर और एक साहिबे सिलसिला सूफ़ी थे इसे महज़ लफ्फाज़ी न समझा जाए के चार जिल्दो में मौजूद आपका फतावा, सहीह बुखारी पर आपकी तालीलात, मुख्तलिफ उर्दू कुतुब की ताअरीब, अरबी वा उर्दू ज़बान में आपकी पुरकशिश शायरी और मुख्तलिफ मौज़ूआत पर तहक़ीक़ उन तमाम बातों पर दलील और आपकी इल्मी कमाल की मुंह बोलती तस्वीरें है

हज़रत मुफ्ती ए आज़म ए हिंद मौलाना मुस्तफा रज़ा ख़ान नूरी अलेह रहमा के विसाल के बाद इफ्ता की तमाम जिम्मादारियां हज़रत ताजुश्शरिया अलेह रहमा के शानों पर थीं इतना ही नहीं खुद अपनी हयात में मुफ्ती ए आज़म ए हिंद अलेह रहमा आपको अपना जांनशीन मुकर्रर कर गए थे चुनांचे फरमाते हैं

"अख़्तर मियां अब घर में बैठने का वक़्त नहीं ये लोग जिनकी भीड़ लगी हुई है बैठने नहीं देते अब तुम इस काम को अंजाम दो मैं इसे तुम्हारे सुपुर्द करता हूं

फिर हाज़िरीन से मुखातिब होकर कहा आप लोग अख्तर मियां से रूजू करें इन्हे मेरा क़ायम मुक़ाम वा जांनाशीन जानें"

(फतावा मरकज़ी दारुल इफ्ता)

बा-अल्फाज़े दीगर अगर यूं कहा जाए तो ग़लत न होगा के आप एक वली की निगाहे असरारे बीं का इंतेखाब थे और ये इंतेखाब भी इतना सच्चा साबित हुआ के क़लील मुद्दत में हज़रत ताजुश्शरिया अलेह रहमा तमाम आलम में बा-हैसियते फक़ीह ज़ाहिर हुए जदीद मसाइल का हल हो या क़दीम मसाइल का तसफिया, हर मजाल में उलामा वा फुज़ला का मरकज़े रूजू आप की ज़ात थी एक मंज़र निगाहों ने वो भी देखा के जब 1995 में मुबारकपुर के फिक़ही सेमिनार में जहां पर वक़्त के फक़ीह हज़रत जलालुद्दीन अहमद अमजदी, अल्लामा अरशद उल क़ादरी जैसे रईस उल क़लम, अल्लामा शरीफ उल हक़ साहब जैसे बे-नज़ीर मुहक़्क़िक़ मौजूद थे और सबने बिल-इत्तेफाक़ मसनदे सदारत पर हज़रते ताजुश्शरिया को बिठाया ये इस बात की खुली दलील है के अपने वक़्त के अकाबेरीन में आप को किस निगाह से देखा जाता था

अब अगर आपकी फिक़ही ख़िदमात पर रौशनी डाली जाए तो पता चलता है के किताबे ज़ीस्त के लगभग सारे औराक फिक़ह वा फतावा के ज़रिए ख़ल्क़ की रहनुमाई से इबारत हैं 2003 में शरई कॉन्सिल ऑफ इंडिया का क़याम हो या

फिर 2007 में अज़हरी मेहमान ख़ाने में रोज़ाना की किसी फिक़्ही मजलिस का इनऐक़ाद या 2009 में ऑनलाइन सवाल जवाब का सिलसिला, ये सब आपकी दीनी ख़िदमात का छोटा सा नमूना हैं इसी तरह चार ज़ख़ीम जिल्दों पर फैला हुआ आपका फतावा मुसम्मा बेहि "**अल-मबाहिब-उर-रज़विया फिल फतावा अल-अज़हरिया**" भी आपकी फिक़्ही महारत पर शाहिदे आदिल की हैसियत रखता है फतावा को निगाहे अमीक़ से देखें तो मुनकशिफ होता है के हज़रते ताजुश्शरिया फिक़्ही कुतुब पर कामिल दस्तरस रखते थे

मुकम्मल फ़तावा जगह जगह अरबी इबारात, मुस्तलिहाते फिक़्हिया, और अदिल्ला ए शरीआ से लबालब नज़र आता है मुफ्ती मुतीउर्रहमान निज़ामी की तहक़ीक़ के मुताबिक़ फतावा ताजुश्शरिया की पहली दो जिल्दो में तक़रीबन 1200 मसाइल का हल मौजूद है और दो जिल्दों का इज़ाफ़ा होने से इस अदद में भी दोगुना इज़ाफ़ा होना चाहिए ताहम ताजुश्शरिया अलेह रहमा ने जहां जदीद मसाइल का फक़ीहाना फैसला फरमाया है वहीं कई पुराने मसाइल जिसमे उलामा व आवाम उलझे हुए थे उनका तशफिया और शुबहात का इज़ाला फरमाया है नौमौलूद मसाइल मसलन टाई, फोटो(Photo) वीडियो (Video), लेज़र ट्रांसप्लांट(Laser Transplant), ब्लड डोनेशन(Blood Donation), आर्गन डोनेशन(Argun Donation) के मसाइल में आपके फतावा सनद की हैसियत रखते हैं दूसरी तरफ़ पुराने मसाइल जैसे हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम

के वालिद का मसअला, वहदत उल वुजूद, तलाक़ ए सलासा, अफज़लियते शैखैन, सहाबा ए किराम नुजूमे हिदायत हैं वगैरह में आपके फतावा ने काफी उलामा वा फुज़ाला को मुतास्सिर किया और तमाम लोगों के शुकूको शुबहात का इज़ाला किया यक़ीनन तमाम आलम में आप न सिर्फ हिंद बल्कि जमीअ़ आलमे इस्लाम में क़ाज़ी उल कुज़्ज़ात बनकर चमके

खुलासा ए कलाम में अगर यूं कहा जाए तो गलत न होगा के अब तक हज़रते ताजुश्शरिया अलेह रहमा की किताबे जिंदगी के चंद औराक़ ही मंज़रे आम पर आए हैं और आप की शख्सियत आफताबो महताब को शर्मा रही है ज़रूरत इस अम्र की है के तहकीक़ के साथ आपकी हयात और ख़िदमात का संजीदगी और बारीक निगाहों से मुताअ़ला किया जाए, तहक़ीक़ी उसलूब में उनको मंजरे आम पर लाया जाए

इसी के साथ मज़मून इख्तिताम पज़ीर होता है अल्लाह तआला हम सब पर अपना रहम फरमाए और हमे अपने बुजुर्गों के फैज़ान से मालामाल फरमाए

तालिब ए दुआ

फरदीन अहमद ख़ान रज़वी

पीलीभीत शरीफ यूपी इंडिया

तज़्किरतुश् – शैख़

ताजुश्शरिया

[हयात व ख़िदमात]

मुसन्निफ़: मोहम्मद हस्सान रज़ा राईनी
मुतर्जिम: कलीम रज़वी

नाशिर: तहरीक निज़ामे मुस्तफा ﷺ

نحمده و نصلى على رسوله الكريم بسم الله الرحمن الرحيم

वो ख़ानदान जिंदा और पाइंदा वक़ार की अलामत बन जाता है जिस के वारेसीन अपने अकाबिरीन की ख़िदमात को जिंदा और पाइंदा रखते हैं याद कीजिए उस ताबनाक दौर को जब अहले सुन्नत व जमाअत के अकाबिरीन फितना ए वहाबिया के सामने एक मज़बूत दीवार बनकर खड़े हो गए थे और अहले सुन्नत के हक़ पर होने का सबूत दिया था और दीन में नए अक़ाइद को नशरो इशाअत करने वालों के खिलाफ़ महाज़ बुलंद किया था जिसमे मौलवी इस्माईल देहलवी के फितने से आगाह करने के लिए अल्लामा फज़्ले हक़ खैराबादी अलेह रहमा का नाम सरे फ़ैहरिस्त आता है आप ने इम्तिनाउ़न-नज़ीर किताब लिखकर इस्माईल देहलवी के बातिल नज़रियात को रेज़ा रेज़ा कर दिया था उसके बाद देयोबंद से एक फितना उठा जिसको फरोग देने के लिए चार मौलवी क़ासिम नानौतवी, अशरफ अली थानवी, रशीद अहमद गंगोही, खलील अंबेठवी ने काम किया उनके अकाइद भी वहाबिया के मुशाबेह थे लेकिन अपने आप को सही साबित करने के लिए इमाम ए आजम अबू हनीफा अलेह रहमा का मुकल्लिद होने का दावा करते थे इन लोगों ने भी नए नए अकाइद गढ़ लिए जिनकी तादाद ज़्यादा है

सलाम हो ख़ानवादा ए रज़विया के उलामा और मशाइख को जिन्होंने उन फितनो से मुसलमानों को आगाह किया जिसमे सरे फहरिस्त आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा ख़ान रहमतुल्लाह अलेह की ज़ात नज़र आती है और आपके दोनो साहिबज़ादे हुज्जतुल-इस्लाम अल्लामा हामिद रज़ा ख़ान और मुफ्ती आज़म ए हिंद अल्लामा मुस्तफा रज़ा ख़ान और आपके भाई अल्लामा हसन रज़ा ख़ान आपके शाना ब शाना रहे और इस फितने से उम्मत को बचाने के लिए अपनी जिंदगियां सर्फ कर दीं इसके साथ साथ सदर-उश्-शरिया अल्लामा अमजद अली आज़मी अलेह रहमा, सदरुल-अफाज़िल अल्लामा सय्यद नईमुद्दीन मुरादाबादी अलेह रहमा, मुहद्दिसे-आज़मे हिन्द कछोछवी अलेह रहमा और शेर बेशैए अहलेसुन्नत अल्लामा हशमत अली ख़ान अलेह रहमा का नाम भी काबिल ए ज़िक्र है इसी ख़ानवादा ए रज़विया के चश्मों चराग़ जिन्हें ताजुश्शरिया के नाम से याद किया जाता है आप के बारे में मुख्तसरन अर्ज़ करता हूं

नाम और नसब:

दस्तूरे ख़ानदान के मुताबिक़ आपका पैदाइशी नाम मुहम्मद रखा गया और आपका पूरा नाम मुहम्मद इस्माईल रज़ा ख़ान है और उर्फी नाम अख़्तर रज़ा ख़ान

है आप इसी नाम से मशहूर भी हैं आलाहज़रत तक आपका शिजरा ए नसब इस तरह है;

ताजुश्शरिया मुफ्ती अख़्तर रज़ा ख़ान बिन **मुफस्सिर ए आज़मे हिंद** मुहम्मद इब्राहीम रज़ा ख़ान बिन **हुज्जतुल इस्लाम** हामिद रज़ा ख़ान बिन **आलाहज़रत** मुफ्ती मुहम्मद अहमद रज़ा ख़ान रहमतुल्लाह अलैहिम

विलादत:

आपकी तारीखे विलादत **1 फरबरी 1943** ईसवी है और ये तारीख़े विलादत आपने ख़ुद बयान की है आपकी विलादत काशाना ए आलाहज़रत मोहल्ला सौदागिरान बरेली शरीफ में हुई, 4 साल 4 माह 4 दिन की उम्र में आपके वालिदे माजिद ने बड़े एहतिमाम के साथ आपकी बिस्मिल्लाह ख़्वानी की तक़रीब का इनएक़ाद किया जामिया रज़विया मंज़रे इस्लाम के जुमला असातिज़ा और तलाबा शरीक हुए

तालीमो तरबियत:

हुज़ूर ताजुश्शरिया ने घर पर ही वालिदा ए माजिदा से क़ुरआने पाक नाज़िरा मुकम्मल किया और वालिदे माजिद से इब्तिदाई किताबें पढ़ीं उसके बाद आप ने

जामिया रज़विया मंज़रे इस्लाम में तालीम हासिल की उसके बाद 1963 ईसवी में आपके वालिद की मर्ज़ी से आपका दाख़िला जामीयातुल अज़हर मिस्र में हो गया वहां आपने उसूले दीन, फन्ने तफसीर व हदीस पर महारत हासिल की आप जिस दौरान जामिया अज़हर में ज़ेरे तालीम थे उसी दौरान 1965 में आपके वालिदे माजिद का इंतिकाल हो गया उस वक़्त आपके हवाले से उन्होंने बहुत ही क़ीमती अल्फाज़ कहे थे जो आबे ज़र से लिखे जाने के क़ाबिल हैं मुख़्तसर ये के

"अल्लाह तआला के फ़ज़लो करम से मेरा अख़्तर अभी जामिया में इल्म का नूर हासिल कर रहा है लेकिन वो दिन क़रीब है के जब वो आसमाने इल्मो फ़ज़ल पर चमकेगा अपने उससे रोशनी पाएंगे और शयातीन और बदख़्वा उससे दूर भागेंगे मगर वो बर्क़े खातिफ की तरह उनका पीछा करेगा"

(हयाते ताजुश्शरिया वा हयाते मुफास्सिर ए आज़म)

दर्सो तदरीस:

1960 ईसवी में आपने मंज़रे इस्लाम में तदरीस का आग़ाज़ किया 1978 में आप सदर-उल-मुदर्रिसीन के ओहदे पर फाइज़ हुए और 1982 से आपने दर्से कुरआन व हदीस का सिलसिला जारी किया जिससे दुनिया भर के उलामा ने इस्तिफादा किया

हज व ज़ियारत और गुस्ले काबा:

हुज़ूर ताजुश्शरिया ने पहला हज 1983 ईस्वी में अदा किया और तक़रीबन पांच हज अदा फरमाए और मुताअद्दिद उमरों से भी फैज़याब हुए और रमज़ान शरीफ के हसीन अय्याम कई बार मक्का मुकर्रमा, मदीना मुनव्वरा में गुज़ारे

10 जून 2013 मुताबिक 1 शाबान 1434 हिजरी में गुस्ले काबा से फैज़याब हुए जब आप काबा शरीफ के अंदर दाख़िल हो रहे थे तो वहां मौजूद लोग आपके बारे में एक दूसरे से पूछ रहे थे ये कौन शख़्स हैं? और काबा में मौजूद लोग आपको शैख़े कबीर बोल रहे थे और दुआ के लिए गुज़ारिश कर रहे थे

(माहनामा सुन्नी दुनिया बरेली शरीफ सफा 3-5)

तसानीफ:

आप ने बहुत सी किताबें तसनीफ फरमाई और आलाहज़रत की उर्दू किताबों का अरबी में और अरबी किताबों का उर्दू में तर्जुमा किया आपकी कुछ तसानीफ ये हैं

1- शरह हदीसे नियत

ये इन्नमल अ़ामालु बिन्नियात की बेहतरीन शरह है

2- हिजरते रसूल ﷺ

3- आसारे क़यामत

क़यामत का क़ायम होना इस्लाम के बुनियादी अक़ायद में से है ये किताब इसी ताल्लुक़ से है तबशीर व इंज़ार पर मुश्तमिल है

4- तीन तलाक़ का शरई हुक्म

ये दरअसल एक सवाल के जवाब में है उसका हिस्सा कुछ यूं है

"फिल वाक़ेअ अइम्मा ए अरबआ़, जमाहीरे अहले सुन्नत का सलाफन वा खलाफन इस अम्र पर इजमा है के इकबारगी तीन तलाक़ देने की सूरत में बीबी पर तीन ही वाकेअ़ होंगी इस अम्र में किसी मुअ़तदिबा का इख्तिलाफ नहीं"

(सवानेह ताजुश्शरिया, सफा नंबर 108)

5- सुनो चुप रहो

ये क़िराअत ख़लफुल इमाम के मौज़ू पर बेहतरीन किताब है इस किताब के आख़िर में दो क़तआ़ मकतूब हैं जो किताब के मा-हसल को ज़ाहिर करते हैं

तिलावते कलामे इलाही जब हो

किसी की सुनो ना तुम अपनी कहो

तकाज़ा ए आदाबे उल्फत यही है

है वाजिब ये तुम पर सुनो चुप रहो

(सवानेह ताजुश्शरिया, सफा 109)

6- टाई का मसअला

7- तस्वीर का हुक्म

8- T.V और Video का opration

9- दिफाए कंजुल ईमान

10- अल मुअ़तक़द उल मुन्तक़द और अल मुस्तनद उल मोअतमद का उर्दू तर्जुमा॰

अल मुअ़तक़द उल मुन्तक़द आलिमे जलील हज़रत मौलाना शाह फ़ज़ले रसूल बदायूंनी अलेह रहमा की तसनीफ है और इस किताब पर आलाहज़रत इमाम अहमद रज़ा ख़ान अलेह रहमा ने हवाशी तहरीर की जिसका नाम अल मुस्तनद उल मोअतमद रखा ये दोनो अरबी ज़बान में लिखी गई हैं

हुज़ूर ताजुश्शरिया ने इसका उर्दू तर्जुमा किया इस उर्दू तर्जूमे का अंदाज़ा इस बात से लगाया जा सकता है के इस पर हिंदो पाक के 22 जय्यद उलामा ए किराम ने तक़ारीज़ क़लमबंद फरमाईं उन्ही जय्यद उलामा में से **मुफ्ती मुहम्मद स्वालेह राईनी** साहब किबला इस तर्जुमे के बारे में लिखते हैं

"तर्जुमे ने मोअतक़द ओ मुस्तनद को गोयाई ज़िंदगीं वा ताबिंदगी दे दी"

और लिखते हैं

"तर्जुमे की वुक़अत का अंदाज़ा हज़रते मुतर्जिम की शाने आलिमियत देखकर हर कसो नाकस बा-आसानी लगा सकता है अलबत्ता तर्जुमे की खूबियां गिनना और बयान करना और बात है"

(सवानेह ताजुश्शरिया, सफा नंबर 115 - 116)

11- इहलाक-उल-वहाबिईन अ़ला तौहीने क़ुबूरिल मुस्लिमीन

ये भी आलाहज़रत की किताब है इसका आपने उर्दू में तर्जुमा किया

12- तैसीर-उल-माऊन लि-सुकनि फित-ताऊन

ये आलाहज़रत की उर्दू तसनीफ है इसका आपने अरबी में तर्जुमा किया

13- इल्हाद-उल-काफ फी हुक्मिद्-दुआ़फ

ये उसूले हदीस, हदीसे ज़ईफ के मौज़ू पर आलाहज़रत की लाजवाब किताब है जो के उर्दू में थी उसका भी अरबी में तर्जुमा हुज़ूर ताजुश्शरिया ने किया

अरबी ज़बान में आपकी तसानीफ:

14- अल-फरदा फी शरह अल-बुरदा

ये इमाम बूसीरी अलेह रहमा का मारूफो मशहूर दीवान क़सीदा बुरदा शरीफ़ की शरह है जिसे हुज़ूर ताजुश्शरिया ने तसनीफ फरमाया

15- हक़ीक़तुल बरेलविया मारुफ बिह मिरात-उन्-नजदिया बजवाबे अल-बरेलविया

गैर मुकल्लिद आलिम इहसान इलाही ज़हीर ने अल-बरेलविया लिखकर बरेलविया को नया फिरक़ा बनाने की सरतोड़ कोशिश की उसके जवाब में हुज़ूर ताजुश्शरिया ने ये किताब लिखी

16- अस-सहाबतु नुजूम-उल-हिदाया

17- तहकीक़ अन्ना अबा इब्राहीमा अलेहिस्सलाम तारुख़ वा लैसा आज़र

18- निहायातुज़्- ज़ैन फी तखफीफे अ्न अबी लहबिन यौमुल इसनैन

19- सफीना ए बख़्शिश आपका नातिया दीवान

हुज़ूर ताजुश्शरिया जहां एक बे मिसाल फक़ीह थे वहीं बहुत बड़े आशिक़े रसूल ﷺ भी थे इसका अंदाजा आपके इस नातिया दीवान को देखने से लगता है अगर कोई सच्चे दिल से आपके कलाम को समाअत करे तो उसका दिल इश्क ए रसूल से सरशार हो जाए और आंखे नम हो जाएं जिसकी कुछ मिसाले बयान करते हैं

मुनव्वर मेरी आंखों को मेरे शम्स-उद-दुहा कर दें

गमों की धूप में वो साया ए ज़ुल्फे दुता कर दें

जहां बानी अता कर दें भरी जन्नत हिबा कर दें

नबी मुख़्तारे कुल हैं जिसको जो चाहें अता कर दें

मक़तअ़ में फरमाते हैं

मुझे क्या फ़िक्र हो अख़्तर मेरे यावर हैं वो यावर

बलाओं को जो मेरी ख़ुद गिरफ्तारे बला कर दें

चेहरा ऐसा के खुदा याद आए:

कंज़ुल उम्माल में हदीस पाक है

أولياء الله الذين إذا رؤوا ذكر الله

अल्लाह के वली वो लोग होते हैं जिनको देखने से खुदा याद आए

हुज़ूर ताजुश्शरिया अलेह रहमा को जब देखते थे तो वल्लाह खुदा याद आ जाता था गोया ऐसा लगता था के हुज़ूर ताजुश्शरिया मज़कूरा हदीस की तफ़सीर बनकर हमारे सामने मौजूद हैं फ़कीर ख़ुद इस बात का मुशाहिदा कर चुका है

खुलासा ए कलाम ये के आप अल्लाह के वली, बेमिसाल आलिमे दीन, फक़ीह, मुफस्सिर और शायर थे आपने पूरी ज़िंदगी हक़ की आवाज़ को बुलंद किया और कभी भी सदाक़त और हक़्क़ानियत का दामन हाथ से नहीं छोड़ा चाहे कितने ही मसलेहत के तकाज़े क्यों न हों हर मसअले पर आपने बेख़ौफ़ो निडर होकर जवाब दिए चाहें वो नसबंदी का मसअला हो या बाबरी मस्जिद का मसअला हो या फिर सऊदी अरब के मज़ालिम हों या टाई, टीवी-वीडियो का मसअला हो

शरीयत के मामले में आपने कभी ज़रा सा भी हल्कापन नहीं आने दिया चाहें दुनिया नाराज़ हो जाए लेकिन जो शरीयत का हुक्म था आपने वही बयान किया

विसाल:

आप 20 जुलाई 2018 बरोज़ जुमा मग़रिब के वक़्त इस दारे फानी को छोड़कर दारे बक़ा की तरफ कूच कर गए आप का विसाल आलमे अहले सुन्नत के लिए बहुत बड़ा ख़सारा है क्योंकि

موت العالم موت العالم

पूरी दुनिया ख़ासकर मक्का मुकर्रमा, मदीना मुनव्वरा और बग़दाद शरीफ़, मिस्र, तुर्की, लंदन, पाकिस्तान, श्रीलंका से मशाइखे अहले सुन्नत और उलामा ए अहले

सुन्नत ने आप के लिए ताज़ियत नामे पेश किए और कसीर तादाद में मुसलमान आपके जनाज़े में शरीक हुए जिसका इहाता करना मुमकिन न था।

अख़्तरे क़ादरी ख़ुल्द में चल दिया

ख़ुल्द वा है हर एक क़ादरी के लिए

अल्लाह से दुआ है पीरो मुरशिद हुज़ूर ताजुश्शरिया के सदक़े में इस मुख्तसर मक़ाले को क़ुबूल फरमाए, अल्लाह हमारा हामी व नासिर हो आमीन